International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 04(II), October - December, 2023, pp. 151-155

# वन्य जीव संरक्षण में हमारी भूमिका

बृज मोहन मीना*

## सार

*वन्य जीवों का अभिप्राय सामान्यतः वनों मे पाए जाने वाले जीवों से लिया जाता है। परंतु वन अनके प्रकार के जीवन का एक हिस्सा है। जलीय आवास, घास के मैदान, हिमच्छादित पर्वत आदि वन नहीं परंतु इनमें पाए जाने वाले जीवों को भी वन्य जीव ही कहा जाता है। आमतौर पर शिकारी वह पर्यटक स्तनियों मे रुचि रखते है। अतः उनकी नजर मे भले ही वन्य जीवन का मतलब स्तनियों से हो परंतु संरक्षण की सोच रखने वाले वह जीव विज्ञानी की दृष्टि में प्राकृतिक आवास में पाए जाने वाले सभी जीव जन्तु वन्य जीव है।इस व्यापक परिभाषा के कारण वन्यजीवों में स्तनियों, पक्षी, उभयचर, सरीसृप, अकशेरुकी, जीव भी शामिल है। जलीय आवास के जीवन को भी इसमें शामिल किया गया है। वन्य जीव संरक्षण का विशेया महत्व यह है कि हम लुप्त होने के कगार पर पहुंचने वाले वन्य जीवों की नस्ल को सुरक्षित रखना ही हमारा उद्देष्य होना चाहिए। हमें इन प्रजातियों के साथ स्थाई रुप से रहने के लिए शिक्षित करना हैं। वन्य जीव वनस्पतियों और उनकी आवास की सुरक्षा करना ही वन्यजीव संरक्षण का मुख्य उद्देश्य है। वन्य जीव संरक्षण को हमको बचाना होगा और हमको आने वाली आगामी पीढीयों को भी इनके संरक्षण की जिम्मेदारी और शिक्षा पीढ़ियों को भी इनके संरक्षण की जिम्मेदारी और शिक्षा दोनो ही देनी होगी। हमको प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग व उपभोग समझदारी से करना होगा। प्लास्टिक व कीटनाशकों का उपयोग कम से कम करे। अवैध पशु पक्षी संबधित व्यापार के विरोध में आम आदमी को अपनी आवाज उठानी होगी जिससे उनके विरुद्ध कठोर नियम बनाए जावे। वह मानव निर्मित कचरों का निस्तारण उचित तरीके से किया जाए जिससे की बहुत सारे जहर इनके खाने व रहने की जगह पर ने घुल सके।*

***शब्दकोशः*** *वन्य जीव, जीवोम, उभयचर, जिन्मोलॉजी, अकशेरुक, बाघ परियोजना, रेड डाटा बुक, राष्ट्रीय उद्यान, कीट नाशक, विस्थापन, संकटापन्न, पारिस्थितिकी संतुलन*

---

## प्रस्तावना

वन्य जीवों का अभिप्राय सामान्यतः वनो में पाये जाने वाले जीव से लिया जाता है परंतु वन अनेक प्रकार के जीवोम का एक हिस्सा है। जलीय आवास, धास के मैदान, हिमाच्छादित पर्वत आदि वन नही परन्तु इसमे पाये जाने वाले जीवों को भी वन्य जीव ही कहा जाता है। आमतौर पर शिकारी व पर्यटक स्तनियों में रुचि रखते है। अतः उनकी नजर मे भले ही वन्य जीवन का मतलब स्तनियों से हो परंतु संरक्षणवादियों व जीव

* सह अचार्य (प्राणीशास्त्र), राजकीय महाविद्यालय, बांदीकुई, दौसा, राजस्थान।

विज्ञानियों की दृष्टि में प्राकृतिक आवास में पाये जाने वाले सभी जीव ही इस व्यापक परिभाषा के कारण वन्य जीवों में स्तनी, पक्षी, उभमचर, सरीसृप व अकशेसकी जींव भी शामिल है। जलीय आवास के जीवों को भी इसमें शामिल किया जाता है, हालांकि परम्परा के अनुसार स्वच्छ जलीय जीवों का अध्ययन लिम्नोलॉजी या सरोविज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है।

लगभग एक शताब्दी पहले तक वनों में प्राकृतिक आवास व वन्य जीवों की कमी नहीं थी। मानव की जनसंख्या भी कम थी और वनों का काट सकने या वन्य जीवों को क्षति पहुंचाने की समय की क्षमता भी कम थी। औद्योगिक क्रान्ति के साथ उपकरणों का विकास हुआ मानव की प्राकृतिक संसाधनों दोहन करने की क्षमता बढी। चिकित्सा पद्धति में सुधार होने से मृत्युदर घटी परंतु जन्मदर में कमी नहीं आई। इसके कारण जनसंख्या बढी जिसके लिए अधिक जमीन, अधिक खेती, अधिक खादों, अधिक घरो, अधिक संसाधनों के ऊर्जा की आवश्यकता हुई, आवागमन के साधन भी बड़े और मनुष्य मूलभूत आवश्यकताओं के साथ आराम तलबी के साधन भी प्रकृति से पाने लगा । इसके परिणामस्वरूप प्रकृति में प्राकृतिक आवास घटते गये। जहाँ भी पानी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था, मनुष्य ने वहाँ खेती करना शुरू किया तथा वहाँ से पक्षी दूर–दराज भागों में भेजना शुरू किया। इसमें नम भाग, सूखे व सूखे भाग नम होने लगे। वनों के संसाधनों का दोहन करने के लिये मनुष्य ने वनों में जाना उसके चारो तरफ रहना शुरू किया था। इसने हिंसक पशुओं का खतरा था। हथियारों की खोज विकास के बाद उन्हें मारने की क्षमता मनुष्य के हाथ लगी। आवागमन साधनों के विकास के साथ वन्य जीवों के उत्पादों का बाजार भी बढा। इस तरह आवास विकास और शिकार के कारण वन्य जीवों की संख्या घटने लगी मनुष्य नें इन जातियों को ठीक से जानने से पूर्व ही अनेक जातियॉ विलुप्त हो गई। ऐसी पृष्ठभूमि में मनुष्य में वन्य जीवों के महत्व को पहचाना व इासके संरक्षण का विचार किया।

वन्य जीव संरक्षण क्यो जरूरी है ? :– वन्य जीवों संरक्षण के अनेक लाभ है। इनका संरक्षण निम्न कारणों से किया जाता है

- मानव जनित विलुप्ति की जिम्मेदारी मावण की है। पृथ्वी पर मानवीय हस्तक्षेप से किसी जाति की विलुप्ति मानव जाति के लिए एक बड़ी नैतिक चुनौति है। एक जाति को विकसित होने मे लाखो वर्ष का समय लगता है। उस कुछ ही वर्षो में मिटा डालना मानवीय भूल है तथा अनैतिक है।
- वैज्ञानिक या प्रबन्धकीय दृष्टिकोण से संकटग्रस्त या विलुप्ति के कगार पर पहुँची जाति को बचाना एक बडी चुनौती है। जिस पर मनुष्य विजय पाकर अपनी क्षमता को सिद्ध करना चाहता है।
- पारिस्थितिकी दृष्टि से संख्या इसलिए आवश्यक है क्योंकि अनेक प्रत्येक जाति की परितंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सभी जीव परितंत्र में एक कड़ी है। एक कड़ी का टूंटना परितंत्र को कमजोर करता है तथा इसका प्रभाव वन्य जीवों के जीवन पर पड़ता है। जिससे उनके संकटग्रस्त होने की सम्भावना बढ़ती है। परितंत्र संतुलन की विलुप्ति से प्रभावित होता है।
- वन्य जीव जीवित प्राकृतिक संसाधन है। उपयोगिता की दृष्टि से संरक्षण इसलिए आवश्यक है क्योकि जीव हमारे लिए अनेक कारणों से उपयोगी है। दुधारू गायो व भैसों, पालतू कुत्तो, भेड़, बकरियों घोड़ों गधों आदि इसी मानव उपयोगी पालतु पशुओं की उत्पत्ति अन्य जीवों से हुई। समस्त फसलो व सजावटी फूलों की उत्पत्ति जंगली वनस्पतियों से हुई। अनेक औषधियों इनसे प्राप्त होती है। इन जीवोम के जीवों में न जाने मानाव की कितनी परेशानियों के हल छिपे हो सकते है। न जाने कितने ही जीवों का उपयोग मानव द्वारा प्रायोगिक मॉडलो के रूप मे होता है। जिससे जीवन के कई रहस्य खुले है। इन्हें नासमझी से नष्ट कर देने से हम बहुत महत्वपूर्ण प्राकृतिक धरोहर को खो देंगे।
- नैतिकता उपयोगिता वैज्ञानिकता के अतिरिक्त यदि हम सौन्दर्य बोध की दृष्टि से देखे तो प्रकृति की विविध वनस्पतियों व जन्तु जातियों की उपस्थिति प्रकृति को अधिक रोचक व आकर्षण बनाती है। अतः इन्हें संरक्षित करना उपयोगी है।

- आर्थिक दृष्टि से भी वन्य जीव उपयोगी है क्योंकि इनसे प्राप्त उत्पादों या इनके कारण चल रहे पर्यटन से भी व्यक्तियों, राज्यों व देंशों की अर्थव्यवस्था चलती है। विश्व की चालीस प्रतिशत औषधियों की प्राप्ति वनस्पतियों या जीवों से होती है।

**वन्य जीव और उनके खतरे**

वन्य जीवों की संख्या में कमी व विलुप्ति के कारण निम्न प्रकार से है।

- **शिकार या अवैध शिकार :–** बहुत से जीवों का शिकार मानव के. द्वारा किया जाता आ रहा है। इसका कारण जीवों से मिलने वाला उत्पाद हो सकता है या उसका मॉस हो सकता है।

- **आवास की क्षति :–** उत्पादक या उपजाऊ आवासों के मनुष्य अपने कृषि उपयोग के लिए काम में ले लेता है। आवासीय बस्तियॉ, औद्योगिक क्षेत्र, हवाई पट्टियाँ आदि बनाने के लिए भी बहुत से क्षेत्रों की प्राकृतिक परिस्थिती को बदल दिया जाता है। इससे वन्य जीवो के आवास की कुल मात्रा व गुणवत्ता में कमी आती है। जब ऐसा शिकार के साथ होता है तो जीवों को दोहरी क्षति झेलनी पड़ती है वनों से मुख्यत लकड़ी प्राप्त होती है जिसके कारण इनका दोहन होता है लकडी के कटते जाने से जंगल की मात्रा व गुणवत्ता में फर्क आता है तथा घने पेडों को पसन्द करने वाले जीवों की संख्या घटती है। बांस मानव के लिए अत्यन्त उपयोगी वनस्पति है और इसका दोहन अधिक करने से इनकी संख्या बहुत तेज गति से कमी आयी है। तथा इस पर निर्भर जातियों की संख्या पर असर पडा है हाथी का भोजन प्रमुखतया बांस है। जो अधिकांश वनों में इनकी मात्रा कम हो गई है।

- **वन्य जीवों को पालतू बनाया गया :–** प्रकृति में अनेक जीव ऐसे है उनके स्वभाव के कारण मानव पालतू बना लेता है। इनके उपयोगी होने के कारण वनो से इन्हे पकडा गया और इनकी संख्या कम होने लगी। हाथी, भालू अनेक प्रकार के तोते, मुनिया पालतू बनाए जाने के लिए पकडे जाते रहे है। ऊँट व घोडे की उपयोगिता के कारण इन्हे इतना पकडा गया कि अब इनकी जंगली प्रजाति समाप्त हो गई है। बिल्लियॉ, कुत्ते, मुर्गें आदि अन्य पालतू पशु है जिनकी वन्य जातियॉ भी पाई जाती है। तथा कभी कभार इनसे इनका संरक्षण भी हो जाता है जिसके परिणामस्वरुप वन्य जाति के जीवों का ह्रास होता है।

- **प्रदूषण :–** मानव द्वारा अनेक प्रकार के प्रदूषक रसायनों का उपयोग भी अनेक जीवों की संख्या घटाता है। समुद्रों मे तेल फैलाव, पानी मे कीटनाशकों का मिलना आदि अनेक जीव की समाष्टियों को समाप्त करता है। यूरोप में शिकारी पाक्षियों के लुप्त होने, अमेरिक ही बाल्ड ईगल तथा भारत में गिद्धो के कम होने के पीछे प्रदूषको का हाथ है। इसका कारण डी. डी. टी तथा डिक्लोफेनेक जैसी औषधियाँ माने गये है।

- **बीमारियों :–** आमतौर पर वन्य जीवों की संख्या बीमारियों के प्रति सन्तुलित होती है। परंतु जब वन्य जीव एक ही स्थान पर पाएँ जाएँ और इनके आवागमन के अवसर न हो तो बीमारी से सभी की मृत्यु होने पर आपस के उपयोगी होते हुए भी वहाँ से समाप्त हो जाते हैं। बीमारियाँ सामान्यता जीवो के आवास के पालतू पशुओं जैसे गाय, बैल, भेड़, बकरी, कुत्तो के उपयोग करने यानि पालतू व वन्य जीवों के पास आने से होती है। भारत में गैंडों में रिन्डर पेस्ट नामक बीमारी से इनकी मृत्यु हुई। यह बीमारी पालतू पशुओं में फैली है। मध्य भारता मे गौर की संख्या में भी इसी प्रकार बीमारी फैलने से भारी गिरावट आई।

- **नई जातियों का फैलना :–** किसी स्थान पर त्रुटिवश या जानबूझ कर नई जातियों को लेकर बसा देने से घातक प्रभाव पड़ सकते है। यह जाति वनस्पति या जन्तु की हो सकती है। सम्भव हो कि नए अवास में अनुकूल परिस्थितियॉ न मिलने से यह पनप पाए परंतु अनेक ऐसी जातियाँ तीव्र वृद्धि करती

हो तथा आवाज के संसाधने का स्थानीय जातियों में अधिक प्रभावी तरीके से उपयोग करने के कारण तथा प्राकृतिक शत्रुओं के अभाव के कारण यहाँ क्षेत्र स्थापित हो जाती है। ये स्थानीय जातियों के मुकाबले में विस्थापित करती है। इससे जीवों की को क्षति होती है। इसका उदाहरण मौरीशस के डोडो जीव की विलुप्ति है। डोडो लगभग 500 वर्ष पूर्व इस द्वीप पर पाया जाता था। यह उड़ नही सकने वाला पक्षी था। द्वीप पर मानव के पहुँचने तथा वहाँ सुअरों को छोडेने से यह पक्षी विलुप्त हो गया। कुछ जीवो का मनुष्य ने सीधे शिकार कर लिया तो दूसरी ओर इसके जमीन में दिये जाने वाले अण्डों को मानव द्वारा बसाए गऐ सूअरों के द्वारा नष्ट कर दिया।

गैलापेगास द्वीप पर बकरियों के बसार जाने से कछुओ की संख्या में गिरावट आई क्योंकि बकरियों ने वनस्पतियों को खा डाला जिसके कारण कछुओं को पानी से दूर जाना पडता था और यहाँ जाते जाते वे चट्टानों में फँस जाते थे और भूख से मर जाते थे। वनस्पतियों की की अनेक जातियों जैसे प्रोसोपिस जूलीफ्लोरो, जलकुम्भी आदि नए आवासों में खूब फैलती है। इसमें स्थानीय वनस्पतियों जिनका स्थानीय जीव उपयोग करते है कि संख्या घटती है इनका फैलाव आवास की गुणवत्ता को घटा कर व स्थानीय वनस्पतियो को घटा कर परितंत्र के समस्त जीव जन्तुओं को प्रभावित करता हो

**संकतग्रस्त जातियॉ**

विश्व की अनेक जातियाँ आवास की क्षति प्रदूषण, शिकार आदि के कारण संख्या में कम हो रही है। तथा विलुप्त होने के कगार पर है। ऐसी सभी जातियो हो संकटग्रस्त कहा जाता है। एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था प्न्छ विश्व की संकटापन्न जातियों अभिलेख रखती है तथा इसके आधार पर जातियों की श्रेणीबद्ध सूची प्रकाशित करती है। खतरे का सामना कर रही जातियों की यह सूची लाल सूची कहलाती है। तथा ऐसी सूची रखने वानी पुस्तक रेड डाटा बुक कहलाती है। अन्तर्राष्ट्रीय सूचियों के अलावा राष्ट्रीय संस्थाएॅ भी अपनी लाल सूचीयॉ प्रकाशित करती है। एक परम्परा के अनुसार पुस्तक में संकटग्रस्त जातियों की सूचना गुलाबी पृष्टो पर छापी जाती है। यदि संरक्षण प्रयासों से संकटग्रस्त जाति खतरे से बाहर हो जाए तो इसन सूचना हरे पृष्टों पर छापी जाती है। लाल रंग मानव की सांकेतिक भाषा खतरे का द्योतक है। अतः संकटग्रस्त जीवने की सूची को या पुस्तक को रेड लिस्ट या रेड डाटा बुक कहा गया।

वन्य जीव संरक्षण के लिए निम्नलिखित उपाय आवश्यक –

- राष्ट्रीय उद्यानों का विकास तथा रख रखाव
- गैर कानूनी तरीके से वन्य जीवों के शिकार और वन्य जीवों और उत्पादों के अवैध व्यापार पर प्रतिबन्ध लगाना।
- राष्ट्रीय उद्यानो तथा अभ्यारणें के आस–पास के क्षेत्रों मे पारिस्थितिकी का विकास
- वन विनास पर रोक
- वन्य क्षेत्र में वृद्धि
- वन्य जीव संरक्षण हेतु विभिन्न प्रकार की परियोजनाओं का अधिक से अधिक क्रियान्वयन करना भी आवश्यक है। जैसे टाइगर प्रोजक्ट, क्रोकोडाइल ब्रीडिंग एण्ड मैनेजमेन्ट प्रोजेक्ट तथा डियर प्लानिंग प्रोजेस्ट इत्यादि।
- संकटापन्न वन्य जीवो के विकस के लिए विशेष प्रयास भारत में प्राणी उद्यानों के प्रबन्ध की देखभाल के लिए एक केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण स्थापित किया गया है। यह संस्था 200 चिडियाघरों के कार्यो में तालमेल करती है और जानवरों के लिए विनिमय की वैज्ञानिक ढंग से देखरेख करती है। इस समय में 23 बाघ परियोजनाएं चल रही है तथा इसके अन्तर्गत 26000 वर्ग किमी से भी अधिक क्षेत्र वनाच्छादित है।

वन्य जीव संरक्षण की आवश्यकता के कुछ पहलु इस प्रकार है कि प्रकृति में पारिस्थितिक संतुलन बनाये रखने के लिए व दूसरा यह कि जीन पूल की सुरक्षा के लिए। वन्यजीव का संरक्षण राष्ट्रीय पार्क तथा पशुओं और पक्षियों के लिए शरणस्थल बनाकर किया जा सकता है। पशुओं का शिकार करने की निषेधाज्ञा कानून पास करके भी इन्हें संरक्षित किया जा सकता है।

**उपसंहार**

वन्य जीव संरक्षण का विशेष महत्व यह है कि हम लुप्त होने के कगार पर पहुँचे वन्य जीवों की नस्ल को सुरक्षित रखना ही हमारा मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। हमे इन प्रजातियों के अस्तित्व को सुनिश्चित करना होगा और लोगों को अन्य प्रजातियों के साथ स्थायी रूप से रहने के लिए शिक्षित करना है।वन्यजीवों, वनस्पतियों और उनके आवासो की सुरक्षा करना ही वन्य जीव संरक्षण का मुख्य उद्देश्य है वन्यजीव संरक्षण को हमको बचाना होगा और उसको आने वाली आगामी पीढ़ियों को भी इनके संरक्षण की जिम्मेदारी और शिक्षा दोनों ही देनी होगी। हमको प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग व उपभोग समझदारी से करना होगा। प्लास्टिक व कीटनाशको का उपयोग कम से कम करे। अवैध पशु–पक्षी संबंधित व्यापार के विरोध में आम आदमी को अपनी आवाज उठानी चाहिए। जिससे उनके विरुद्ध कठोर नियम बनाए जाये व मानव निर्मित कचरें का निस्तारण उचित तरीके से किया जाये जिससे वह जहर पर्यावरण में जहर नहीं घुल सके। कलकारखानों को जंगलों से दूर स्थापित किया जाने व शहरीकरण के नाम पर मासूम वन्य जीवों व प्रकृति से खिलवाड़ न हो।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. भाटिया कोहली भटनागर :– पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण जैविकी
2. ग्रामाराम नवानी :– सुलभ प्रकाशन लखनऊ
3. अनुजा त्यागी, मंजुला के. सक्सेना, नरेनू जैन :– पर्यावरण अध्ययन
4. के. सी. सोनी :– पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण जैविकी
5. धीरेन्द्र देवर्षि :– पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण जैविकी
6. पी. डी. शर्मा :– पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण जैविकी
7. विभिन्न समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं व इलेक्ट्रोनिक मिडिया

❖◆❖